'तेरा वर्ष'

सम्पन्न सप्ताह

20.01.2013

1. **स्वमान** – मैं ब्रह्मा बाप समान **सम्पन्न** फरिश्ता हूँ।

- मेरे पिता के ही समान मेरे पास भी सर्व खजाने हैं...ज्ञान का खजाना, गुणों व शक्तियों का खजाना, समय, श्वाँस व संकल्पों का खजाना...मैं सर्व खजानों से सम्पन्न हूँ...मैं संसार में सबसे अधिक धनवान हूँ...सबसे अधिक भाग्यवान हूँ...ब्रह्मा बाप समान **सम्पन्न** फरिश्ता हूँ...।

2. **योगाभ्यास** –

अ. मैं फरिश्ता हूँ...मुझ पर शिव बाबा की किरणें उतर रही हैं...जिन्हें भी मैं देखता हूँ, उनके ऊपर भी शिव बाबा की किरणें उतर रही हैं...वे भी फरिश्ते बनते जा रहे हैं...।

ब. मेरा सम्पूर्ण फरिश्ता स्वरुप मेरे सामने खड़ा है...मैं उसे अपलक निहार रहा हूँ...वह चलता हुआ मेरे समीप आता है और मुझमें समा जाता है...।

स. मेरा फरिश्ता स्वरुप मेरे सिर के ऊपर खड़ा है...उससे चारों ओर लाइट-माइट की किरणें फैल रही हैं...।

3. **धारणा – शांत और मधुर**

- जो शांत और मीठे हैं, बाबा उन्हें बहुत प्यार करते हैं। जो बहुत बोलते हैं, उनकी शक्तियाँ नष्ट हो जाती हैं और वे एकाग्रचित्त नहीं हो पाते। जिनका स्वभाव मीठा नहीं है, उन्हें संसार में कोई भी पसंद नहीं करता और वे सबकी ओर प्यार पाने की कामना से निहारते रहते हैं।

4. **चिंतन** –

- किन-किन खजानों में हमें सम्पन्न बनना है?
- इन खजानों में सम्पन्न बनने के लिये क्या करना होगा?
- मैं अभी तक किन खजानों में सम्पन्न हुआ हूँ और किन-किन में सम्पन्न होना बाकि है?
- अपने `सम्पन्न फरिश्ते स्वरुप` का शब्दचित्र बनायें?

5. **तपस्वियों प्रति** – प्रिय तपस्वियों ! आओ हम सभी ब्राह्मण परिवार में सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने की लहर फैलायें। इच्छाओं और तृष्णाओं से वैराग्य धारण करके श्रेष्ठ योगी जीवन का प्रकाश चारों ओर फैलायें। हमारी सम्पन्न अवस्था ही समय को समीप लायेगी और सबके मन के अंधकार को दूर करेगी। इस रेस में जो आगे होंगे, वही श्रेष्ठ भाग्य के अधिकारी होंगे और इस महान परमात्म कार्य में मुख्य भूमिका निभायेंगे।